पूर्व प्राथमिक शिक्षा और आँगनवाड़ी केन्द्र

आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना ज़रूरी

सुनील कुमार साह

आँगनवाड़ी केन्द्र बच्चों के सीखने का बेहतर केन्द्र तभी हो सकता है जब वहाँ सीखने का ख़ुशनुमा वातावरण हो। बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ कराई जा रही हों जिन्हें करने में उन्हें मज़ा आ रहा हो, और उनका सीखना भी उसमें शामिल हो। ऐसा तभी सम्भव है जब आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सिखाने में, गतिविधियाँ कराने में आनन्द आए और उन्हें हर गतिविधि का उद्देश्य स्पष्ट भी हो।

आज़ादी के बाद, देश में सरकारी और ग़ैर-सरकारी स्तर पर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को लेकर कई प्रयास हुए। लेकिन व्यापक स्तर पर एक संगठित प्रयास 1975 में आँगनवाड़ियों की स्थापना से होता है, अर्थात् आज से 50 वर्ष पूर्व। उस समय स्वास्थ्य और शिक्षा का विस्तार काफ़ी सीमित था। सभी लोगों तक आधारभूत स्वास्थ्य सुविधाओं और विद्यालय की पहुँच नहीं थी। साक्षरता की दर बहुत कम थी। बच्चों और माताओं में कुपोषण के कारण होने वाली मृत्यु दर काफ़ी अधिक थी। ये दोनों ऐसी आधारभूत ज़रूरतें थीं जिनके बिना विकसित भारत की कल्पना नहीं की जा सकती थी।

लेकिन जैसे-जैसे इन सेवाओं का विस्तार हुआ और इनसे सम्बन्धित संस्थाएँ लोगों के नज़दीक पहुँचीं तब इनका सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिला। इसमें आँगनवाड़ी केन्द्र और इससे जुड़े कार्यकर्त्रियों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल, पोषण की सुनिश्चितता, मातृ और बाल मृत्यु दर में कमी लाना तथा सभी को आधारभूत शिक्षा उपलब्ध करवाना अपने-आप में काफ़ी जटिल और मुश्किल काम है। इस पूरे कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, इसकी लोगों तक पहुँच का होना। आँगनवाड़ी एक ऐसी जगह हो जो लोगों के घर के पास हो, जैसे कि घर का आँगन होता है जहाँ सभी आसानी से पहुँच सकते हैं। आज देश में लगभग 13 से 14 लाख आँगनवाड़ी केन्द्र हैं। गाँव के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच के हिसाब से देखें तो ये सबसे महत्त्वपूर्ण संस्थान हैं।

चित्र 1: उद्देश्य की स्पष्टता से खेल-खेल में सीखना सम्भव है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की महत्ता को पुनः रेखांकित किया गया है। इस कारण से आँगनवाड़ी केन्द्र में स्वास्थ्य और पोषण के साथ-साथ पढ़ाई को एक महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में स्थापित किया गया है। यह बात अनेक शोधों से स्थापित हो चुकी है कि बच्चों का 80 प्रतिशत मानसिक विकास उनके शुरुआती एक हज़ार दिनों में हो जाता है। ऐसे में पूर्व प्राथमिक शिक्षा, आँगनवाड़ी के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन जाती है।

कई बार जाने-अनजाने हम आँगनवाड़ी को संचालित करने के लिए बहुत सारे ऐसे तरीक़े सुझाते हैं जो वास्तविकता से दूर और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों की समझ से परे होते हैं। उनमें सीखने के सिद्धान्त, ज्ञान और सीखना, बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं, जैसी सैद्धान्तिक बातें ज़्यादा हावी हो जाती हैं, और मज़ेदारी का उत्साह ग़ायब हो जाता है। इस तरह की चीज़ें आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए सहज वातावरण बनाने के बजाय उन्हें भयभीत और निराश करती हैं, और उनका ख़ुद का सीखने का उत्साह भी कम हो जाता है।

हम सबको मिलकर यह प्रयास करना होगा कि प्रत्येक आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री इस बात के लिए सक्षम हो पाए कि वो अपने केन्द्र में 2-3 घण्टे कुछ ऐसा कर पाए जिसमें बच्चों को मज़ा और सिर्फ़ मज़ा आए। इसी मज़ेदारी में वो कुछ सीख भी जाएँगे। इस उम्र में हम जितना उनके साथ छोटी-छोटी कहानियों, कविताओं के साथ काम और तरह-तरह के खेल करवा पाएँ या इनके ज़्यादा मौक़े दे पाएँ, उतना बच्चों का लगाव केन्द्र से बढ़ेगा और उनकी निरन्तरता भी बनेगी। इसका एक फ़ायदा यह भी होगा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री भी इन गतिविधियों को आसानी से कर पाएँगी। सवाल उठता है कि यह होगा कैसे?

हम लोगों को इस क्षेत्र में कार्य करते हुए दो साल से ज़्यादा हो गए हैं। इन दो सालों के अनुभव में हम यह सुनिश्चित कर पाए कि इस आयु वर्ग के बच्चों और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री दोनों के लिए यह ज़रूरी है कि वे किसी भी बात को कितनी सहजता और सरलता से कहते या बताते हैं। सहजता इसकी पहली शर्त है। दूसरी शर्त है, अपने आस-पास की चीज़ों को शामिल कर गतिविधियों का निर्माण करना।

कई बार गतिविधियाँ अमूर्तता में डिज़ाइन होती हैं। इन्हें न तो आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री समझ पाती हैं न ही अपनी गतिविधियों का हिस्सा बना पाती हैं।

आँगनवाड़ी केन्द्र विद्यालय की कक्षा की तरह संचालित नहीं हो सकता, जहाँ बच्चे पंक्तियों में बैठे हों और उन्हें पढ़ाया जाए। इस केन्द्र की परिकल्पना बिल्कुल अलग है। ऐसी जगह जहाँ बच्चों को आनन्द आए, उन्हें अपने मन का करने की स्वतंत्रता हो। वहाँ का वातावरण बोझिल न हो। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सभी बच्चों को समान रूप से कार्य करने के अवसर देती हों, और ज़्यादातर गतिविधियाँ गोल घेरे में बैठाकर संचालित की जाती हों। इसके साथ ही, सभी बच्चों को कुछ निर्देशित और कुछ स्वतंत्र रूप से की जाने वाली गतिविधियों में शामिल होने, वस्तुओं को छूने, महसूस करने, कुछ बनाने के मौक़े देने जैसे तमाम पहलुओं पर काम करने में स्वतंत्रता हो। एक साथ एक गतिविधि भी हो सकती है और एक से ज़्यादा भी। गतिविधि करने से ज़्यादा ज़रूरी है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सभी बच्चों को गतिविधियों में कितना शामिल कर पाती हैं और उन्हें गतिविधि के दौरान कितनी स्वतंत्रता देती हैं।

एक-दो उदाहरणों से इसे समझने का प्रयास करते हैं–

एक केन्द्र में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने बच्चों के साथ रंगों की समझ को लेकर कार्य करना तय किया। बच्चों को बहुत सारे रंगों के साथ एक-एक काग़ज़ भी दिया गया। सभी को अलग-अलग फल और उससे जुड़े रंग दिए गए। उनसे कहा गया कि पहले देखकर फल बनाएँ, फिर उसमें रंग भरें। बहुत सारे बच्चे इस स्थिति में नहीं थे कि वे फलों के चित्र बना पाएँ, और उनकी संगतता में चित्रों में रंग भरें। कुछ ने कहे अनुसार ही काम करना तो ज़्यादातर ने रंगों के साथ खेलना शुरू किया। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को लगा कि ये तो नहीं कर रहे हैं। तब उन्होंने ख़ुद कुछ फलों के चित्र बनाए और कुछ बच्चों को अपने साथ अलग-अलग उन चित्रों में रंग भरने के लिए कहा। कुछ बच्चे जो यह भी नहीं कर पा रहे थे, उनको कुछ भी आकृतियाँ बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। सभी ने कुछ-कुछ आकृतियाँ बनाईं। कार्यकर्त्री ने तब उन्हें सभी रंगों का बारी-बारी से उपयोग करने के लिए प्रेरित किया ताकि वे इन सब रंगों के बारे में कुछ समझ विकसित कर पाएँ। बाद में उन्होंने सभी फलों और उनसे सम्बन्धित रंगों को लेकर बात की। यहाँ मुद्दा यह नहीं था कि सभी बच्चों ने फलों के चित्र बनाए। इसका उद्देश्य उन्हें अलग-अलग रंगों की पहचान कराना, रंगों के साथ खेलना, रंग भरने के लिए उपयोग किए जा रहे ब्रश को पकड़ना, काग़ज़ पर कुछ चित्रों को उकेरना, और ख़ुश होने का मौक़ा देना था ताकि यही ख़ुशी आगे के लिए बच्चों को फिर से ज़्यादा उत्साह के साथ काम करने के मौक़े खोले। इससे एक तरह का भावनात्मक सम्बन्ध विकसित होता है जो बच्चों के मानसिक विकास में मददगार साबित होता है। इसी तरह की बहुत सारी गतिविधियों को आगे के चरणों में विस्तार देते हुए इसकी शृंखला बनाकर काम करने की ज़रूरत है।

> **“एक आँगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को ज़्यादा ख़ुश देखा जहाँ कार्यकर्त्री उन्हें कहानियाँ या कविता सुनाने पर ज़्यादा काम करती हैं। बच्चे गोल घेरे में बैठ जाते हैं, और काफ़ी मज़े से उसमें अपना मनोरंजन खोजते हैं।”**

एक अन्य केन्द्र का अनुभव बिल्कुल अलग है। आँगनवाड़ी केन्द्र में कुछ जानवरों से सम्बन्धित फ़्लैश कार्ड दिए गए। द्वि-आयामी होने के कारण, इसमें जानवरों के चित्र इस तरह से बने थे कि बच्चे उनके सभी अंग नहीं देख सकते थे। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री ने पहले चित्र को दिखाते हुए उनका जानवरों से परिचय कराया, और पूछा कि इसके कितने पैर हैं, इत्यादि। बच्चों ने

चित्र 2 : आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को खेलों और गतिविधियों के उद्देश्यों से परिचित होना ज़रूरी है

> आँगनवाड़ी एक ऐसी जगह हो जो लोगों के घर के पास हो, जैसे कि घर का आँगन होता है, जहाँ सभी आसानी से पहुँच सकते हैं।

चित्र में जो देखा, वही बताया। उन्होंने फिर दोहराया, "नहीं, इनके कितने पैर हैं?", बच्चों को समझ नहीं आया, उनके चेहरों पर असमंजसता के भाव आते हुए आसानी से देखे जा सकते थे। यहाँ पर चित्रों का चयन इस सावधानी से किया जा सकता था कि बच्चों को जानवरों के पैर, पूँछ, आदि अंगों का आसानी से परिचय कराया जा सके।

तीसरे केन्द्र के अनुभव से कुछ और बातें समझ सकते हैं। यहाँ कार्यकर्त्री ने अमूर्त और मूर्त, दोनों का अच्छा मिश्रण अपनी गतिविधि में किया। बच्चे बहुत सारी चीज़ें अपने परिवेश में देखते हैं, और उन्हें पहचानते भी हैं। मसलन, इमली व चने के बीज, तरह-तरह की दालें, जिन्हें वे खेलने और खाने, दोनों में इस्तेमाल करते हैं। इस तरह की और भी बहुत सारी चीज़ें हो सकती हैं। कार्यकर्त्री ने बीजों को अलग-अलग रंग के गुब्बारों में भर दिया और बच्चों को टटोलकर पहचानने के लिए दिए। पहले तो उन्हें समझ में नहीं आया, लेकिन धीरे-धीरे जब कुछ बच्चों ने शुरुआत की, सभी उसमें शामिल होते चले गए। बच्चे काफ़ी ख़ुश हो रहे थे, जब वे अनुमान लगाकर उन चीज़ों को पहचान पा रहे थे।

इसके अलावा, हमने उस आँगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को ज़्यादा ख़ुश देखा जहाँ कार्यकर्त्री उन्हें कहानियाँ या कविता सुनाने पर ज़्यादा काम करती हैं। बच्चे गोल घेरे में बैठ जाते हैं, और काफ़ी मज़े से उसमें अपना मनोरंजन खोजते हैं। कई केन्द्रों पर जब कार्यकर्त्री उनसे पूछती हैं कि आज क्या करना है, अकसर बच्चे कहानी सुनाने की ज़िद करते हैं।

कुल मिलाकर यह कहने की कोशिश है कि सहज और सरल तरीक़ों से भी सीखने को आसान बनाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो गतिविधियाँ सिर्फ़ सीखने को प्रेरित करने वाली न होकर मज़ेदारी वाली हों। मज़ा होगा तो सीखना भी हो जाएगा। छत्तीसगढ़ में कार्य करते हुए हमने इस बात को प्राथमिकता में रखने का प्रयास किया कि यदि प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र कुछ बिन्दुओं पर केन्द्रित होकर कार्य कर पाए तब वह बेहतर केन्द्र के रूप में स्थापित हो सकता है। इसके लिए ज़रूरी है–

- आँगनवाड़ी केन्द्र समय पर खुले और समय पर बन्द हो;
- वह सीखने का आकर्षक केन्द्र बने;
- प्रत्येक केन्द्र लगभग 1 से 2 घण्टे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों पर कार्य करे;
- आँगनवाड़ी केन्द्र बच्चों को सहज और समावेशी वातावरण देने का भरपूर प्रयास करे; आदि।

आँगनवाड़ी केन्द्र में लोगों का रुझान बढ़े, इसके लिए ज़रूरी है केन्द्र की गतिविधियों और उपलब्धि को लगातार समुदाय के साथ साझा करना। बच्चों और महिलाओं को जोड़कर ऐसे मेले का आयोजन करना जिसमें सबकी भागीदारी और हिस्सेदारी हो। साथ ही, सफलता के छोटे-छोटे पहलुओं को पहचानना और उनको प्रसारित करना। यह कोशिशें हमारे काम को हौसला प्रदान करती हैं, और काम करने के लिए उत्साहित करती हैं। समुदाय भी अभी तक इन केन्द्रों को एक समय का भोजन प्रदान करने वाले केन्द्र के रूप में ही पहचानते हैं। आँगनवाड़ी केन्द्रों को अपनी उस बनी-बनाई सीमित पहचान से बाहर निकलकर ऐसे केन्द्र के रूप में अपनी पहचान को स्थापित करना होगा जिसमें न सिर्फ़ पोषण और स्वास्थ्य होता है, बल्कि मज़ेदारी भी होती है।

ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयासों से हम आँगनवाड़ी केन्द्रों को सीखने का भी एक बेहतर केन्द्र बना पाएँगे।

सुनील कुमार साह तक़रीबन 28 वर्षों से शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे विगत 15 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं। वर्तमान में छत्तीसगढ़ की टीम को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

सम्पर्क : sunil@azimpremjifoundation.org